



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब के सरी	२०-१२-२३	५	३-६

## कनाडा, पोलैंड व ब्राजील के वैज्ञानिकों ने दिए व्याख्यान

**कार्यशालाओं से होगा शोधार्थियों में नवाचारों का संचार : प्रो. काम्बोज**

हिसार, 19 दिसंबर (ब्लूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय में चल रही दो अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं का समापन हुआ।

पहली 15 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला जिसका मुख्य विषय 'गुणात्मक और मात्रात्मक फसल उपज बढ़ाने के लिए आधुनिक जैव रासायनिक और जीनोमिक उपकरणों का अनुप्रयोग' रहा, जबकि दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला का मुख्य विषय 'अनुवाद अध्ययन: एक अवलोकन' रहा। उपरोक्त दोनों कार्यशालाओं के मुख्य सरक्षक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज रहे।

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा की समय-समय पर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित की जा रही कार्यशालाएं शोधार्थियों के ज्ञान में बढ़ि व अंतर्राष्ट्रीय एक्सपोजर बढ़ाने में सहायक है। उन्होंने प्रतिभागियों



कार्यशाला में उपस्थित विदेशी वैज्ञानिकों को सम्मानित करते हुकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज / से ज्यादा से ज्यादा संख्या में कार्यशालाओं में भाग लेकर सीखने के और प्राप्त ज्ञान व नवाचारों को व्यवहारिकता में लाने पर बल दिया। इस दौरान अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय से आए वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. देवकी नंदन और पोलैंड के वारसॉ विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर डॉ. टकाओ इशिकावा ने प्रशिक्षकों की भूमिका निर्भाई।

कनाडा से पहुंचे अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षक डॉ. देवकी नंदन ने अपने अनुभव साझा करते हुए कार्यशाला

में भाग ले रहे शोधार्थियों को समय का सदुपयोग और नया सोचने के लिए प्रेरित किया। पोलैंड से पहुंचे डॉ. टकाओ इशिकावा ने कहा कि कार्यशाला में आयोजित तकनीकी सत्रों में दिए व्याख्यानों से प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार के जीन और एंजाइमों की पहचान कर फसलों के लक्षणों में सुधार करने के लिए सक्षम बनाएंगा। इस कार्यशाला के आयोजक सचिव एवं बायोकैमिस्ट्री की विभागाध्यक्ष डॉ. जयंती टोकस, डॉ. विनोद गोयल और डॉ. अनुज राणा थे।

दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला में

ब्राजील के ब्रासीलिया विश्वविद्यालय में विदेशी भाषाएं और अनुवाद अध्ययन विभाग में कार्यरत प्रोफेसर वाल्मी हैजे फगिंओं अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षक के रूप में मौजूद रही। उन्होंने कहा कि अनुवाद संस्कृतियों के बीच कड़ी का काम करता है और नई जानकारी, ज्ञान और विचारों को दुनिया भर में फैलाता है।

अनुवाद अध्ययन लोगों को कौशल विकसित करने और भाषा को सुधारने में मदद करता है। उन्होंने प्रतिभागियों से नए क्षेत्र में नए विचार के साथ प्रोजैक्ट बनाने के लिए भी प्रेरित किया।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

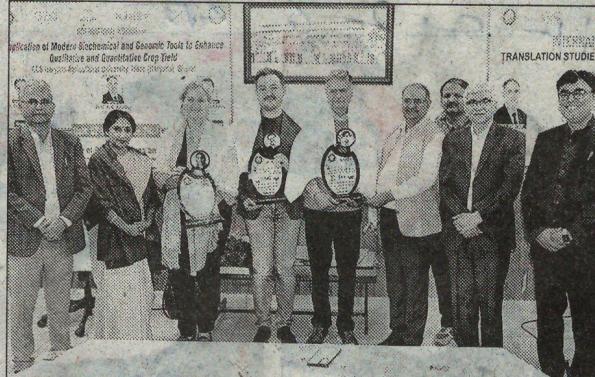
सम्मुचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ईर मूँज	२०-१२-२३	।।	२-६

## हकृवि में चल रही दो अंतरराष्ट्रीय कार्यशालाओं का समापन अंतरराष्ट्रीय कार्यशालाओं से होगा शोधार्थियों में नवाचारों का संचार : प्रो. काम्बोज

कनाडा, पोलैंड त ब्राजील  
के वैज्ञानिकों ने  
व्याख्यान दिए।

हरिगूर्मी न्यूज़ || हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय में चल रही दो अंतरराष्ट्रीय कार्यशालाओं का समापन हुआ। पहली 15 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला जिसका मुख्य विषय गुणात्मक और मात्रात्मक फसल उपज बढ़ाने के लिए आधुनिक जैव रासायनिक और जीवोंमिक उपकरणों का अनुप्रयोग रहा, जबकि दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला का मुख्य विषय अनुवाद अध्ययन एक अवलोकन रहा। उपरोक्त दोनों कार्यशालाओं के मुख्य सरक्षक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज रहे। मुख्यात्मि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा की समय-समय पर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित



हिसार। कार्यशाला में उपस्थित विदेशी वैज्ञानिकों को सम्मानित करते हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

फोटो: हरिगूर्मी

की जा रही कार्यशालाएं शोधार्थियों के ज्ञान में बढ़ि व अंतरराष्ट्रीय एक्सपोजर बढ़ाने में सहायक है। उन्होंने प्रतिभागियों से ज्यादा से ज्यादा संख्या में कार्यशालाओं में भाग लेकर सीखने और प्राप्त ज्ञान व नवाचारों को व्यवहारिकता में लाने पर बल दिया।

इस दौरान अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला में कनाडा के ब्रिटिश

कोलंबिया विश्वविद्यालय से आए वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. देवकी नंदन और पोलैंड के वारसॉ विश्वविद्यालय से आयोजित तकनीकी सभों ने दिए व्याख्यानों से प्रतिमितियों को विभिन्न प्रकार के जीव और दंजाहनों की पहचान कर फसलों के तकनीकों में सुधार करने के लिए सक्रिय बनाएगा। उन्होंने विश्वविद्यालय के शोधार्थियों के कोशल की सराहना करते हुए कहा कि विद्यार्थियों के बिना हर संस्थान अध्यात्म है। जल्दत है तो इन विद्यार्थियों की समय के सथी अपने आप को अपडेट करने व अपने ज्ञान नवाचारों, प्रौद्योगिकियों और जीवशत् का विकास करने पर ध्यान देना चाहिए। इस कार्यशाला के आयोजक संवित एवं बायोकैमिस्ट्री की विभागाध्यक्ष डॉ. जयती टोकम, डॉ. विनोद गोयल और डॉ. अंबुज राणा थे।

विभाग में कार्यरत प्रोफेसर वाल्मी हैजे फगिंओं अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षक के रूप में मौजूद रही। इस कार्यशाला के आयोजन सचिव भाषा एवं हरियाणवी संस्कृति विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. अपर्णा और डॉ. पूनम मोर रही। समापन समारोह में

पाठ्यक्रम निदेशक और मौलिक विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने सभी का स्वागत किया और कार्यशालाओं की रिपोर्ट प्रस्तुत की। अंत में पाठ्यक्रम निदेशक डॉ. के.डी. शर्मा ने धन्यवाद किया।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्पादक पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ईनी + इल्यून	20-12-23	५	६८

## हृषि में अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित कनाडा, पोलैंड, ब्राजील के वैज्ञानिकों ने दिए व्याख्यान

हिसार, 19 दिसंबर (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय में चल रही 2 अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं का समापन हुआ। पहली 15 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला जिसका मुख्य विषय 'गुणात्मक और मात्रात्मक फसल उपज बढ़ाने के लिए आधुनिक जैव रासायनिक और जीनोभिक उपकरणों का अनुप्रयोग' रहा, जबकि दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला का मुख्य विषय 'अनुवाद अध्ययन: एक अवलोकन' रहा। उपरोक्त दोनों कार्यशालाओं के मुख्य संरक्षक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज रहे।

इस अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में कनाडा के ब्रिटिश कॉलंबिया विश्वविद्यालय से आए वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. देवकी नंदन और पोलैंड के वारसॉ विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर डॉ. टकाओ



हिसार स्थित हृषि में आयोजित कार्यशाला में विदेशी वैज्ञानिकों को सम्मानित करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज। -हप्र

इशिकाव ने प्रशिक्षकों की भूमिका निभाई।

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा की समय-समय पर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित की जा रही कार्यशालाएं शोधाधिरथों के ज्ञान में वृद्धि व अंतर्राष्ट्रीय एक्सपोजर बढ़ाने में सहायक है। उन्होंने प्रतिभागियों से ज्यादा से ज्यादा संख्या में कार्यशालाओं में भाग लेकर सीखने और प्राप्त ज्ञान व

नवाचारों को व्यवहारिकता में लाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने कई अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ आपसी सहयोग के लिए समझौते किए, जिनके तहत वैज्ञानिक और शोधाधिरथों विदेश में जाकर आधुनिक तकनीकों के बारे में प्रशिक्षण ले सकें और विदेशी वैज्ञानिक इस विश्वविद्यालय में आकर नई तकनीकें व जानकारी प्राप्त कर सकें।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक माझे	20-12-27	५	५-५

हफ्तविमें दो अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओंका समापन  
कनाडा, पोलैंड व ब्राजील के  
वैज्ञानिकोंने दिए व्याख्यान

भारतरन्धु | हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान और मानविकी कॉलेज में चल रही दो अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं का समापन हुआ। पहली 15 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला जिसका मुख्य विषय 'गुणात्मक और मात्रात्मक फसल उपज बढ़ाने के लिए आधुनिक जैव रासायनिक और जीनोमिक उपकरणों का अनुप्रयोग' रहा, जबकि दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला का मुख्य विषय 'अनुवाद अध्ययन: एक अवलोकन' रहा। उपरोक्त दोनों कार्यशालाओं के मुख्य संरक्षक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज रहे। मुख्यातिथि प्रो. बी आर. काम्बोज ने कहा की समय-समय पर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित की जा रही कार्यशालाएं शोधार्थियों के ज्ञान में वृद्धि व अंतर्राष्ट्रीय एक्सपोजर बढ़ाने

डॉ. देवकी नंदन ने नया सोचने के लिए प्रेरित किया

कनाडा से पहुंचे अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षक डॉ. देवकी नंदन ने अनुभव साझा करते हुए कार्यशाला में भाग ले रहे शोधार्थियों को समय का सदुपयोग और नया सोचने के लिए प्रेरित किया।

में सहायक है। उन्होंने प्रतिभागियों से ज्यादा से ज्यादा संख्या में कार्यशालाओं में भाग लेकर सीखने और प्राप्त ज्ञान व नवाचारों को व्यवहारिकता में लाने पर बल दिया। इस दौरान अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में कनाडा के ब्रिटिश कॉलेजिया विश्वविद्यालय से आए वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. देवकी नंदन और पोलैंड के वारसो विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर डॉ. टकाओ इशिकाव ने प्रशिक्षकों की भूमिका निभाई।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,

## हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्प्रचार पत्र का नाम  
२१ नं. ५ ज०१६१२७१

दिनांक

२०-१२-२३

पृष्ठ संख्या

२

कॉलम

२-५

## 'कार्यशालाओं से नवाचारों का संचार'

जागरण संवाददाता, हिसार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय में चल रही दो अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं का समापन हुआ। पहली 15 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला जिसका मुख्य विषय 'गुणात्मक और मात्रात्मक फसल उपज बढ़ाने के लिए आधुनिक जैव रासायनिक और जीनोमिक उपकरणों का अनुप्रयोग' रहा। दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला का मुख्य विषय 'अनुवाद अध्ययन, एक अवलोकन' रहा। उपरोक्त दोनों कार्यशालाओं के मुख्य संरक्षक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज रहे।

प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि समय-समय पर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित की जा रही कार्यशालाएं शोधार्थियों के ज्ञान में वृद्धि व अंतर्राष्ट्रीय एक्सपोजर बढ़ाने में



हकृति के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज द्वारा कार्यशाला में उपस्थित वैदेशी वैज्ञानिकों को सम्मानित करते हुए। • पीआरओ

सहायक है। उन्होंने प्रतिभागियों से ज्यादा से ज्यादा संख्या में कार्यशालाओं में भाग लेकर सीखने और प्राप्त ज्ञान व नवाचारों को व्यवहारिकता में लाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने कई अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ आपसी सहयोग के लिए समझौते किए, जिनके तहत वैज्ञानिक और शोधार्थी विदेश में जाकर आधुनिक तकनीकों के बारे में प्रशिक्षण ले सकें। इस दौरान अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला

में कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय से आए वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. देवकी नंदन और पौलेंड के वारसा विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर डा. टकाओ इशिकाव ने प्रशिक्षकों की भूमिका निभाई। दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला में ब्राजील के ब्रासीलिया विश्वविद्यालय में विदेशी भाषाएं और अनुवाद अध्ययन विभाग में कार्यरत प्रोफेसर वाल्मी हैजे फगिंओं अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षक के रूप में मौजूद रही।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अभ्यन्तरीन उपराष्ट्रीय कार्यशाला	२०-१२-२३	५	६-८

## कार्यशालाएं शोधार्थियों के ज्ञान में वृद्धि और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दिशा देने में सहायक

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय में चल रही दो अंतरराष्ट्रीय कार्यशालाओं का समापन हुआ। पहली 15 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला जिसका मुख्य विषय 'गुणात्मक और मात्रात्मक फसल उपज बढ़ाने के लिए आधुनिक जैव रासायनिक और जीनोमिक उपकरणों का अनुपयोग' रहा, जबकि दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला का मुख्य विषय 'अनुवाद अध्ययन: एक अवलोकन' रहा।

उपरोक्त दोनों कार्यशालाओं के मुख्य संरक्षक विवि के कुलपति प्रोफेसर डॉ. बीआर कांबोज रहे। मुख्यातिथि प्रो. बीआर कांबोज ने कहा की कार्यशालाएं शोधार्थियों के ज्ञान में वृद्धि व अंतरराष्ट्रीय एक्सपोजर बढ़ाने में सहायक हैं। इस दौरान अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला में कनाडा के ब्रिटिश कॉलंबिया विश्वविद्यालय से आए वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. देवकी नंदन और पोलैंड के वारसॉ



एचएयू की कार्यशाला में उपस्थित विदेशी वैज्ञानिकों को सम्मानित करते हुए कुलपति प्रो. बीआर कांबोज। स्नौत संस्थान

विश्वविद्यालय में संहायक प्रोफेसर डॉ. टकाओ इशिकावा ने प्रशिक्षकों की भूमिका निभाई।

**शोधार्थी समय का सदुपयोग कर  
अनुसंधान पर दे जोर : डॉ. देवकी नंदन**

: कनाडा से पहुंचे अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षक डॉ. देवकी नंदन ने अपने अनुभव साझा करते हुए कार्यशाला में भाग ले रहे शोधार्थियों को समय का सदुपयोग और नया सोचने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि आधुनिक जैव रासायनिक और जीनोमिक उपकरणों के अनुप्रयोग ने कृषि के क्षेत्र में क्रांति ला दी है जो कृषि

वैज्ञानिकों को उन्नत गुणात्मक व मात्रात्मक उपज विशेषताओं के साथ नई फसल किस्मों को विकसित करने में सक्षम बनाती है।

**विद्यार्थियों के बिना संस्थान अधूरा :**  
डॉ. टकाओ : पोलैंड से पहुंचे डॉ. टकाओ इशिकावा ने कहा कि कार्यशाला में आयोजित तकनीकी सत्रों में दिए व्याख्यानों से प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार के जीन और एंजाइमों की पहचान कर फसलों के लक्षणों में सुधार करने के लिए सक्षम बनाएगा। उन्होंने विवि के शोधार्थियों के कौशल की सराहना की।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अग्रीत समाचार	20-12-23	५	५-७

## हृषि में चल रही दो अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं का समापन, कनाडा, पोलैंड व ब्राजील के वैज्ञानिकों ने दिए व्याख्यान

विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं से होगा शोधार्थियों में नवाचारों का संचार : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार, 19 दिसम्बर (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय में चल रही दो अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं का समापन हुआ। पहली 15 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला जिसका मुख्य विषय 'गुणात्मक और मात्रात्मक फसल उपज बढ़ाने के लिए आधुनिक जैव रासायनिक और जीनोमिक उपकरणों का अनुप्रयोग' रहा, जबकि दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला का मुख्य विषय 'अनुवाद अध्ययन: एक अवलोकन' रहा। उपरोक्त दोनों

कार्यशालाओं के मुख्य संरक्षक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज रहे। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि समय-समय पर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित की जा रही कार्यशालाएं शोधार्थियों के ज्ञान में वृद्धि व अंतर्राष्ट्रीय एक्सपोजर बढ़ाने में सहायक हैं। उन्होंने प्रतिभागियों से ज्यादा से ज्यादा संख्या में कार्यशालाओं में भाग लेकर सीखने और प्राप्त ज्ञान व नवाचारों को व्यवहारिकता में लाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने कई अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ आपसी सहयोग के लिए समझौते किए, जिनके तहत वैज्ञानिक और शोधार्थी विदेश में जाकर आधुनिक तकनीकों के बारे में प्रशिक्षण ले सकें और विदेशी वैज्ञानिक इस विश्वविद्यालय



हृषि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज द्वारा कार्यशाला में उपस्थित विदेशी वैज्ञानिकों को सम्मानित किए जाने का दृश्य।

में आकर नई तकनीकें व जानकारी प्राप्त कर सकें। प्रो. काम्बोज ने देश-विदेश के संस्थानों से आए प्रब्ल्यात वैज्ञानिकों का आभार जताया। इस दौरान अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में कनाडा के ब्रिटिश कॉलोनीया विश्वविद्यालय से आए वर्षि वैज्ञानिक डॉ. देवकी नंदन और पोलैंड के वारसॉ विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर डॉ. टकाओ इशिकाव ने प्रशिक्षकों की भूमिका निभाई। कनाडा से पहुंचे अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षक डॉ. देवकी नंदन ने अपने अनुभव साझा करते हुए कार्यशाला में भाग ले रहे शोधार्थियों को समय का सटुपयोग और नया सोचने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि आधुनिक जैव रासायनिक और जीनोमिक उपकरणों के अनुप्रयोग ने कृषि के क्षेत्र में क्रांति ला दी है

जो कृषि वैज्ञानिकों को उन्नत गुणात्मक व मात्रात्मक उपज विशेषताओं के साथ नई फसल किसीं को विकसित करने में सक्षम बनाती है। उन्होंने विश्वविद्यालय के शोधार्थियों के कौशल की सराहना करते हुए कहा कि विद्यार्थियों के बिना हर संस्थान अधूरा है। इस कार्यशाला के आयोजक सचिव एवं वायोकेमिस्ट्री की विभागाध्यक्ष डॉ. जयंती टोकस, डॉ. विनोद गोयल और डॉ. अनुज राणा थे। दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला में ब्राजील के ब्रासीलिया विश्वविद्यालय में विदेशी भाषाएं और अनुवाद अध्ययन विभाग में कार्यरत प्रोफेसर वाली हैं जो फिरियों अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षक के रूप में मौजूद रहीं। इस कार्यशाला के आयोजन सचिव भाषा एवं हरियाणी संस्कृति विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. अपर्णा और डॉ. पूनम मोर रहीं। समापन समारोह में पाठ्यक्रम निदेशक और मौलिक विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने सभी का स्वागत किया और कार्यशालाओं की रिपोर्ट प्रस्तुत की। अंत में पाठ्यक्रम निदेशक डॉ. के.डी. शर्मा ने धन्यवाद किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के समस्त महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष, वैज्ञानिक व शोधार्थियों के अलावा देश-विदेश के संस्थानों से आए प्रब्ल्यात वैज्ञानिक भी मौजूद रहे।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अभूत उत्ताला	२०-१२-२३	५	१-५

सेहत

गेहूं में मिलाकर करें मोटे अनाज का प्रयोग, सेहत के लिए होगा लाभदायक

## सर्दी के मौसम में बाजरे के उपयोग से बढ़ेगी प्रतिरक्षा

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। सर्दी के मौसम में मोटा अनाज खाने व मोटे अनाज से बने उत्पाद खाने से स्वास्थ्य को अधिक फायदा होगा। मोटे अनाज में फाइबर, मिनरल, आयरन, कैल्शियम और जिंक की मात्रा ज्यादा होती है। जो सेहत के लिए अच्छी होती है। ज्यादा देर तक एनर्जी मिलती रहती है।

बाजरे के लड्डू का सेवन करने से बजन भी कम होता है। सर्दी के मौसम में बाजरे का उपयोग अधिक होता है। यह हमारी इम्युनिटी पावर को भी बढ़ाता है, हमें बीमारियों से बचाता है। बाजरे की रोटी, बाजरे के लड्डू, बाजरे का केक, बाजरे की खिचड़ी, बाजरे का पिज्जा भी बनाकर खा सकते हैं।

मोटे अनाज से बने उत्पाद स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होते हैं। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में बाजरे से बने उत्पाद केक, बिस्कुट और लड्डू एक दिन पहले



बाजरे से बने बिस्कुट। संवाद

### मोटे अनाज के फायदे

मिलेट्स बने उत्पाद खाने से स्वास्थ्य ठीक रहता है। मोटे अनाज में फाइबर, मिनरल, आयरन, कैल्शियम और जिंक की मात्रा ज्यादा होती है, जो सेहत के लिए अच्छी होती है, और ज्यादा देर तक एनर्जी मिलती रहती है। बाजरे के लड्डू का सेवन करने से बजन भी कम होता है।

“ अपनी दिनचर्या में मिलेट्स को शामिल करना चाहिए। गेहूं के साथ किसी भी मोटे अनाज को मिलाकर उससे बने आटे से रोटी या अन्य उत्पाद बनाकर खाने चाहिए। यह हमारे स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद रहते हैं। विवि में मोटे अनाज को लेकर शोध कार्य चलते रहते हैं। इतना ही नहीं विश्वविद्यालय की ओर से लोगों को मोटे अनाज के लिए प्रेरित भी किया जा रहा है। सरकार ने 2023 को मिलेट्स इयर घोषित किया हुआ है। इसको लेकर एचएयू की तरफ से भी मोटे अनाज को बढ़ावा देने के

### ये मिलेगा रेट

250 ग्राम बिस्कुट	70 रुपये
बाजरे का केक	200 रुपये प्रति केक
चॉकलेट केक	220 रुपये प्रति केक

### मोटे अनाज में शामिल फसल

बाजरा, ज्वाग, रागी, कुतकी, कोडो, सामक, कांगनी, चीना के उत्पाद शामिल हैं। डॉ. संगीता सिंधु ने बताया कि ये मिलेट्स भी हमें किसी न किसी रूप में खाने चाहिए। इनमें ग्लूटन नहीं होता और धीरे-धीरे हजम होते हैं तो डायबिटिज रोटी भी बनाने में आसानी होती है।

बताया कि मिलेट्स को बढ़ावा देने के लिए कई कार्यक्रम और अनुसंधान चल रहा है ताकि किसानों की आय भी अच्छी हो और स्वास्थ्य भी बना रहे।

लिए कई कार्यक्रम व जागरूकता शिविर भी लगाए जा चुके हैं। एचएयू में रागी, सामक और कांगनी को लेकर शोध चल रहा है। कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

५३५ पृष्ठ

दिनांक

19.12.2023

पृष्ठ संख्या

--

कॉलम

--

## हकूमिके छात्रों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर की खेल सुविधाएं उपलब्ध करवाना हमारी प्राथमिकता : प्रो. बी.आर. काम्बोज

**कुलपति ने किया शहीद मदन लाल द्विंगरा बहुउद्देशीय हॉल में वातानुकूलित जिम का उद्घाटन**

### पाठ्यक्रम चूक्ति

हिसार, 19 दिसंबर : छात्रों का यह इतिहास कृषि विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के एकीकृत विद्यालय के लिए न केवल विद्या स्तर पर अधिक उनकी शारीरिक व मानसिक स्थिति से स्वास्थ रखने के लिए अंतर्राष्ट्रीय खरों की जैसे सुविधाएं उपलब्ध कराना हमारी प्राथमिकता है। ये विद्यालयविश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय के ग्राहक मटन लाल द्विंगरा बहुउद्देशीय हॉल में वातानुकूलित जिम के उद्घाटन कार्यक्रम के दैनांच बड़ी मुश्किलियत संभवीकृत कर रहे थे। कुलपति ने वातानुकूलित जिम का उद्घाटन कर दूर ही रही समस्त मुश्किलों की सारांश की। इस रहे कि विद्यार्थियों के लिए यह एक अत्यधिक अनुरोध है। इस अवसर पर युवाओं प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि अन्यथा स्वास्थ्य ही मानसी बहु खूब है। अर्थात् स्वास्थ्य सीरीज़ में ही स्वास्थ्य मन विद्यालय करता है। उन्होंने काल विद्यार्थियों को अपने सर्वनामों को उड़ान देने के लिए पहाड़ों के



लैन ट्रेनिंग, विनयट्रिभ्युन एक्सोइट्रेक, अंड्रोनिक, पुरावाल, बैक्सिंग, बैडमिंग हॉल व डोकी वेल्व ग्लैम अथवा सुविधाओं का लाभ उठाकर राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेल खेल चुके हैं। इस अवसर पर युवाओं प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि अन्यथा स्वास्थ्य ही मानसी बहु खूब है। अर्थात् स्वास्थ्य सीरीज़ में ही स्वास्थ्य मन विद्यालय करता है। उन्होंने काल विद्यार्थियों को अपने सर्वनामों को उड़ान देने के लिए पहाड़ों के

स्वास्थ योगों को स्वास्थ रखना चाहते रहते हैं। विद्यार्थी अपने साथीयों को इस नवी दर मात्राएं वातानुकूल ने सहायि स्वास्थ्य विद्यार्थियों के भोवता समझाया। विद्यार्थी उपरोक्त विद्यालय के लकड़ी महान लाल द्विंगरा बहुउद्देशीय हॉल में वातानुकूलित जिम के लिए अधिकारी विद्यार्थियों ने उपलब्ध रही है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सभी विद्यार्थियों के अविद्यालय, निर्देशक, ऐकायिक, विद्यार्थियों स्वास्थ्य सह नियोजक समिति ग्रामीण व शहरी ग्रामीण विद्यालय व विद्यालय विद्यालय (सेल) वाले वातानुकूल विद्यार्थी उपरोक्त रहे।

स्वास्थ योगों को स्वास्थ रखना चाहते रहते हैं। विद्यार्थी अपने साथीयों को इस वातानुकूल नियोजक वाले अनुल द्विंगरा ने उपरोक्त विद्यालय में उपलब्ध सुविधाओं का उपयोग करते हुए वातानुकूल यह भी विद्यार्थियों को उपलब्ध रही है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सभी विद्यार्थियों के अविद्यालय, निर्देशक, ऐकायिक, विद्यार्थियों स्वास्थ्य सह नियोजक समिति ग्रामीण व शहरी ग्रामीण विद्यालय व विद्यालय विद्यालय (सेल) वाले वातानुकूल विद्यार्थी उपरोक्त रहे।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पात्र लज्जा	19.12.2023	--	--

अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं से होगा शोधार्थियों में नवाचारों का संचार : प्रो. काम्बोज

四百四十一

हिसार। जैधरी चाला सिंह हृष्णवल्लभ कुमार विभूतिप्रसाद के प्रौढ़िक विद्वान् और प्रशंसनिकी प्रबलविद्वान् में चल रहे थे अंतर्राष्ट्रीय कार्यपालकों वाले सम्मान कुमार। फिर 15 विद्यमान अंतर्राष्ट्रीय कार्यपालक जिसका मुख्य विषय 'प्रशंसनक और प्रशंसनात्मक कामन उत्तम बढ़ने के लिए आधुनिक और स्थानीय और जीवीकारक उत्तरार्थों का अनुपायोग' रह, जबकि कुमारी 10 विद्यमान विधायिकाओं का मुख्य विषय 'अनुदृढ़ अध्ययन एक अक्षरालेखन' रहा। उपरोक्त दोनों विधायिकाओं को मुख्य सार्वजनिक विभूतिप्रसाद के उत्तरार्थी प्रीक्षणक और अता वापसीकरण के।

प्राणीतिधि थे, वे आर. वहायेज ने वहार  
की प्राण-प्रणय का विश्वविद्यालय द्वारा  
अधोजन वर्ते जा रही काम्पस-कार्स लीर्निंग्स  
के द्वारा मैं सुन्दर व अंतर्राष्ट्रीय एकान्वेश  
करने में सहायता है। उसने प्रीविडिंग्स दो सो  
जाइट से जारी प्रौद्योगिकी व प्रशिक्षण भी दी थी।  
मैंने यहाँ आने और इस द्वारा व नकलने की चो



अमरावतीकाल में ताजे पान बिका। उन्होंने कहा कि रिसर्चविवाहप में वह और असाधुप संस्थानों के मध्य अपनी साझेदारी के लिए प्रयत्न किए, जिनके तहत वैज्ञानिक और सांख्यिकीय विद्या में ज्ञान वित्तीयक उन्नती के लिए में प्रयत्नण से मर्मी और विद्यों के लिए इस रिसर्चविवाहप में आवार नई उन्नतीके बीच जगतवारी प्रका कर मर्मी। प्रैक्टिकल ने डॉ. किंशु के संस्थानों में आवार

ऐसी नेतृत्व वाले आधारे अनुभव साझा करते हुए प्रायोगिकता में भाग ले रहे थे। ऐसी विधि को समझना महत्वपूर्ण और यह सोचने के लिए पैरिस किया। उन्होंने कहा कि आधुनिक जैव विवरणीक और जैवीयक उपकरणों की अप्रूपीता ने वृषि के लोगों में प्रश्नीलता दी है जो वृषि विवेचनों ने उत्तर गुणवत्ता के प्रश्नमाला उपकरणों के साथ नहीं प्राप्त किया था। इसीलिए कानून में संबंध बढ़ावाए रखा जा रहा है। उन्होंने कहा कि इन आधुनिक तकनीकों ने कामों में उपज में बढ़द व विवर में गहरी साझा प्रक्रिया करने में सहाय की है। जिससे कामों में वह विवरण विवरणों परीक्षितीयों में जैविक अनुकरण संभव हो सकता।

विद्युतीयों के लिए संस्थान अपना ; हाँ, उकाओ।  
पैरों से पूँचे हाँ, उनको छोड़ना चाहिए :

के बैलूल वही साथ्यन करते हुए कहा कि लिपिकिंगों के बिना ही संख्यन असू ती है जहरत है तो इन लिपिकिंगों वही माध्यम के साथ अपने अवय वो अपेक्ष करते वह अपने इन, नह चाहें, प्रौढ़ीकिंगों और बैलूल वह विकास करते पा ख्यान देता राखिए। इस वर्णनालया के अपेक्षक मरणिय एवं व्यापोद्योगिता की लिप्याभ्यन्त तु, जाती रहता, तु विनोद गेपन और तु अनुब्र एवं था।

कुणी 10 लिंगार्थम् वर्णनात् मैं अजीत  
के द्वारा लिप्य विवरणात् मैं लिंगार्थम् भवति  
और अनुद्वाद अथवा लिंगार्थ मैं वर्णीत  
पृष्ठेन स्वरूप है जो परिणामों और लिंगार्थम्  
प्रशासक के रूप में देखा जाता है। उसीने कहा  
कि अनुद्वाद संस्कृतियों के बीच वार्ता का एकम  
कारण है और वह ज्ञानवादी, इन और विचारों  
को कुणित धर में ऐलान करा अनुद्वाद अथवा  
स्वरूप जो वैज्ञान विवरण करने और भाषा  
को सुनाने में मद्दत करता है। उसीने  
प्रतिवार्ताओं से नए दैनंदिन में नए विचार के साथ  
प्रोग्रेस बनाने के लिए भी प्रेरित किया।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त दीरपणा	19.12.2023	--	--

हकूमें चल रहों दो अंतर्राष्ट्रीय कायंशालाओं का समापन  
कनाडा, पोलैंड व ब्राजील के वैज्ञानिकों ने दिए व्याख्यान

समस्त हिन्दूयाणा न्यूज हिसार, 19 दिसंबर। चीफरी चरण हिन्दूयाणा कूपि विश्वविद्यालय के भीती विज्ञान और मनविज्ञान प्राप्तिविद्यालय चल रही थी और अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं का खालीपन हुआ। पहले 15 दिवस अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला विश्वविद्यालय के 'प्रगतिशील और मानवामर्क फ़ैसले' उन वर्षों के लिए आधुनिक जीव विज्ञान और जीवोंपक्ष उपकरणों का अनुप्रयोग तथा, जावेकि दृष्टि 10 दिवसीय कार्यशाला का पूर्ण विषय 'अन्युज अस्थियन अक्षयोक्तन' था। उपरोक्त दोनों विज्ञानों के मूल्य संरक्षक विषय विद्यालय के कृत्यकालीन प्रोफेसर थे, आर. काम्पने थे। मृत्युविद्यालिंग प्रो., शे. आर. काम्पोने विज्ञान की सम्पर्क-सम्पर्क पर विश्वविद्यालय द्वारा आयोगित की जा रही कार्यशाला

आए प्रख्यात वैज्ञानिकों का आपारा जाता। इस दीर्घ अंतर्राष्ट्रीय कालांशला में कठाला के शिटिंग कोलोनिया या विद्युतीय से आए गरिष्ठ वैज्ञानिक वृंद में देखको नहीं और पोलिड के बाल्फी क्षिविद्यालय में सहायक प्रोफेसर डॉ. लकड़ाओं इश्काह ने प्रशिक्षकों को भूमिका निभाई।

किए, जिनमें सहज वैज्ञानिक और शोधार्थी विदेश में जाकर आवृत्तिक हक्कीनों के बारे में प्रशंसित थे तथा और विदेशी प्रोधार्थी समय का सदृप्यावेग करने अनुमत्यान पर दे जो : डॉ. हेवर्कर्न बंदन

विद्यानिक इस विवरणितालय में आकर नहीं कनाटा से पहुँचे औरराष्ट्रीय प्रशिक्षक अंडा तक होते थे जाकरगांव प्राप्त कर सके। प्रौ. देवकी चैतन ने अपने अनुयाय साझा करती राजा गोपनी ने देवी-देवी के संस्कारों से उन कार्यालयों में जाए जो ऐसीप्रशिक्षित



को सम्पर्क का संदर्भयोग और नवा सोचने के लिए प्रेरित हिंसा। उन्होंने कहा कि विद्युतीयों के बिना सम्बन्ध अधूरा : डॉ. टकाओ

विकास करने पर व्यापक देश भाग है। इस कार्यशाला के आयोजक संघित एवं व्यापोहोमटी की विभागावध्यक झंडी, जर्मनी टोकिंग, अंग बिनोर गोयल और डॉ अंतुग रणा थे। दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला में ग्राजिन के ब्रायोलिया विश्वविद्यालय में विदेशी भाषाएँ और अनुवाद अध्ययन विभाग में कार्यक्रम प्रोफेसर बालोपी हैं जो फलितांत्रिक विधि प्रशिक्षक के रूप में पीछा रही। उन्होंने कहा कि अनुवाद संस्कृतियों के बीच काढ़ी का काम करता है और नई जानकारी, ज्ञान और विद्यारों को दुनिया भर में फैलाता है। अनुवाद अध्ययन सांगों को जीवशाल विकास करने और भाषा को सुनारेन में मदद करता है। उन्होंने प्रतिभासियों से नए क्षेत्र में नए विचार के साथ प्रोफेसर अनाने के लिए भी प्रेसिडियम। इस कार्यशाला के आयोजन संघित भाषा एवं हरियाणावी संस्कृति विभाग की विभागावध्यक झंडी, अरणी और डॉ. पूनम पांडे रही। समाप्त समारोह में पालवाल कम निर्देशक और ग्रीष्मिक विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. नीरज कुमार ने सभा का स्वागत किया और कार्यशालार्थी की रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने परद्युमन निर्देशक डॉ. कै. डी. रामन ने अनुवाद किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के समस्त महाविद्यालयों के अधिकारी, निदेशक, विभागावध्यक, विज्ञानिक व शोधाधिकारी के अवसान देश-निरेश के संघानों से आए प्रख्यात विज्ञानिक भी मौजूद रहे।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

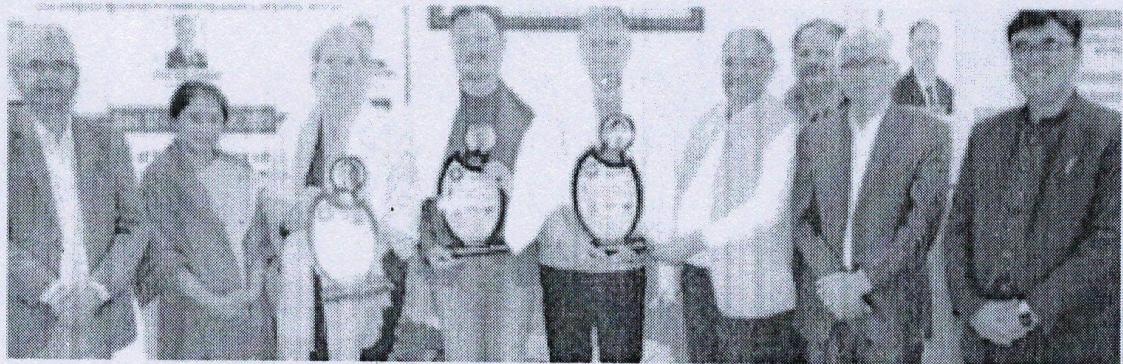
समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिंचन पत्र	19.12.2023	--	--

## हकूमि में अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला संपन्न

कर्नाटक, पोलैंड व ब्राजील के वैज्ञानिकों ने दिए व्याख्यान

मिट्टी पल्ली न्यूज़, हिमार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गैरिलिक विभाग और मानविकी भवित्वविद्यालय में चल रही दो अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं का आयोग बढ़ाया। पहली 15 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला जिसका मुख्य विषय 'गुणात्मक और मात्रात्मक फर्मल उपज बढ़ाने के लिए आधुनिक जैव रसायनिक और जैवोंगिक उपकरणों का अनुप्रयोग' रहा, जबकि दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला का मुख्य विषय 'अनुवाद अध्ययन: एक अवलोकन' रहा।

मुख्यालियत प्रो. वी.आर. काम्बोज ने कहा की समय-समय पर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित की जा रही कार्यशालाएं शोधार्थियों के ज्ञान में बढ़ि व अंतर्राष्ट्रीय



कुलपति प्रो. वी.आर. काम्बोज द्वारा कार्यशाला में उपचारिता विदेशी वैज्ञानिकों को स्वागतिशीलता दिलाई गई।

एक समोजर बढ़ाने में सहायक है। उन्होंने प्रतिभागियों से ज्यादा से ज्यादा संकुला वैज्ञानिकों में कार्यशालाओं में भाग लेकर सीखने और प्राप्त ज्ञान व विवाचों को व्यवहारिकता में लाने पर चल दिया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने कई अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ आपसी सहयोग के

लिए समझौते किए, जिनके तहत वैज्ञानिक और शोधार्थी विदेश में आकर आधुनिक तकनीकों के बारे में प्रशिक्षण से सकें और विदेशी वैज्ञानिक इस विश्वविद्यालय में आकर नई तकनीकें व जानकारी प्राप्त कर सकें। प्रो. काम्बोज ने देश-विदेश के संस्थानों से आए प्रश्नोत्तरों

वैज्ञानिकों का अभाव जताया। इस दैर्घ्य अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में कर्नाटक के विभिन्न कालेजिया विश्वविद्यालय से आए विदेशी वैज्ञानिक द्वारा देवकी नंदन और पोलैंड के व्यारसी विश्वविद्यालय में सहयोग प्रोत्साहित की जा रही है। इनका विश्वविद्यालय ने प्रशिक्षकों की भूमिका निभाई।